नीति होगी—बच्चों की संख्या बढ़ाने के स्थान पर उनका स्तर बढ़ाने में तत्पर होंगे। दाम्पत्य जीवन में रूप और कामुकता के विषबीज को उखाड़ कर उसे दो सहचरों की सघन मान्यता के रूप में परिणत करेंगे।

रचनात्मक कार्यों से आगे का चरण है—संघर्ष। इसके लिए अधिक मजबूती, अधिक साहसिकता, अधिक साधन और अधिक सङ्गठित शक्ति चाहिए। युद्ध एक कला है, समय, शक्ति और साधनों को देख कर ही उसे आरम्भ करना चाहिए। उतावले लोग ऐसे ही असमय लड़ मरते हैं तो पिटते और हारते हैं। हमें व्यापक अनाचार के विरुद्ध सुविस्तृत और समर्थ मोर्चा खड़ा करना ही होगा। असुरता का दमन बिना जूझे हो ही नहीं सकता। रावण, कंस, दुर्योधन, हिरण्यकश्यप, सहस्रबाहु आदि को समझाने वालों ने सारे प्रयत्न कर लिये थे पर सफल केवल सङ्घर्ष ही हुआ। हमें जिनसे लड़ना है उन अज्ञान, अनाचार और अभाव के असुरों का छद्मवेश बहुत ही विकराल है। वे न तो दीख पड़ते हैं और न सामने आते हैं। उनकी सत्ता भगवान की तरह व्यापक हो रही है। अज्ञान-ज्ञान की आड़ में छिप कर बैठा है, अनाचार को पकड़ना कठिन पड़ रहा है, अभावों का जो कारण समझा जाता है वस्तुतः उससे भिन्न ही होता है। ऐसी दशा में हमारी लड़ाई व्यक्तियों से नहीं—अनाचार से होगी। रोगियों को नहीं हम रोगों को मारेंगे। पत्ते तोड़ते फिरने की अपेक्षा जड़ पर कुठाराघात करेंगे।

भावी महाभारत अपने अलग ही युद्धकौशल से लड़ा जायगा। उसमें पिछले ढंग की रण-नीति काम न देगी। निहित स्वार्थों से इतने अधिक लोग ओत-प्रोत हो रहे हैं उनने लोकप्रियता की रेशमी चादर ऐसी अच्छी तरह लपेट रखी है कि उन पर व्यक्तिगत रूप से आक्रमण करते न बन पड़ेगा। हम प्रवाहों से जूझेंगे, धाराओं को मोड़ेंगे और अनाचार का विरोध करेंगे। उसके समर्थन में जो लोग होंगे वे सहज ही लपेट में आजायेंगे और औंधे मुँह गिर कर मरेंगे।

धर्म-ध्वजी साधु पण्डितों की आड में अन्ध-विश्वास सामाजिक अनाचार छिपे बैठे हैं। वे पुरातनवाद का समर्थन करने के नाम पर मूढ़ताओं, और अनीतियों का समर्थन संरक्षण करते हैं। हम व्यक्तियों पर आक्षेप करने की अपेक्षा उन पाखण्डों की पोल खोलेंगे, जो भी उनका समर्थन करता होगा वह अपने आप जन-आक्रोश का शिकार बनेंगे और बेमौत मरेंगे। साहित्यकार बनकर जो सरस्वती से व्यभिचार कर रहे हैं, पशु प्रवृत्तियों को भड़का कर चाँदी बटोर रहे हैं, हम उनका नाम लिये बिना जनता को यह बतायेंगे कि इस अनाचार ने किस प्रकार जन-जीवन का सर्वनाश किया है, जो भी उस दुष्टता में संलग्न होंगे उनका मुँह काला होगा। संगीत अभिनय, कला, चित्र और फिल्मों के सहारे जिनने पशु प्रवृत्तियाँ भड़का कर मनुष्य को पशुता के गर्त में धकेला है उस सोना बटोरने वाली लिप्सा के विरुद्ध हम घृणा का अभियान छेड़ेंगे फिर जो कोई इस कलंक कालिमा में हाथ धो रहे होंगे कलंकियों की पंक्ति में खड़े किये जायेंगे! आज इन लोगों को जनता की अज्ञानता का लाभ लेकर श्रेय सम्मान और धन-वैभव दोनों हाथों से समेटने का अवसर है कल इन्हें सड़क पर चलना और भले लोगों की पंक्ति में सिर उठा कर चल सकना कठिन हो जायगा। हम जन-आक्रोश का ऐसा वातावरण पैदा करेंगे जहाँ भी छद्म बन कर अनाचार छिपता है उन सभी छिद्रों को बन्द करके रहेंगे।

व्यापारिक क्षेत्र में, सरकारी मशीनरी में, राजनेताओं में, चिकित्सकों में शिक्षकों में यहाँ तक कि हर वर्ग में हर व्यक्ति में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से अनाचार की जड़ें अत्यन्त गहराई तक घुसती चली गई हैं। इनमें एक-एक को चुनना सम्भव नहीं, किसी का दोष सिद्ध करना भी कठिन है ऐसी दशा में व्यक्तियों से नहीं धाराओं से हम लड़ेंगे। हर दुष्प्रवृत्ति का भण्डा-फोड़ करेंगे और वह ऐसा तीखा होगा कि सुनने वाले तिलमिला उठें और उनमें प्रवृत्त लोगों के लिए मुँह छिपाना कठिन हो जाय। जन-आक्रोश ही इतने व्यापक भ्रष्टाचार से लड़ सकता है। हम उसी को उभारने में लगे हैं। समय ही बतायेगा कि हमारा संघर्ष कितना तीखा और कितना बाँका होगा। बौद्धिक क्रान्ति की—नैतिक क्रान्ति की—सामाजिक क्रान्ति की दवानल इतनी प्रचण्डता पूर्वक उभारी जायगी कि उसकी लपटें आकाश चूमने लगें। अज्ञान और अनाचार का कूड़ा करकट उसमें जलकर ही रहेगा।

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.

वानप्रस्थ मात्र प्रचार प्रयोजन के लिये ही आमन्त्रित नहीं किये गये हैं। प्रथम चरण में थोड़ी सफलता मिलते ही, जन-सम्पर्क को अधिक सघन और समर्थ बनाने के लिए वे रचनात्मक कार्य-क्रमों का श्री गणेश करेंगे और इसके बाद उन्हें संघर्षात्मक क्रिया-कलापों में जुटना होगा। नव-निर्माण का यह त्रिकोण मोर्चा है। तीनों पर एक साथ तो नहीं—एक स्थान पर थोड़े भर जमना दूसरे का सम्भालना यही हमारा रणकौशल है। यही अपनी क्रिया पद्धति है। उसकी सामयिक रूप-रेखा समयानुसार बनाई जाती रहेगी और परिस्थितियों को—शक्ति को तथा साधनों को ध्यान में रखकर कार्यान्वित की जाती रहेगी। कार्य-क्षेत्र अत्यन्त व्यापक है इसलिए थोड़े से कार्य-क्रम लेकर नहीं चला जा सकता। विशाल लक्ष्य को विशाल साधनों और विशाल माध्यमों के साथ ही पूरा किया जायगा। सामयिक सूझ-बूझ को ही ऐसे महान प्रयोजनों में प्रश्रय देकर चलना पड़ता है।

हिन्दू समाज में धर्म-ध्वजियों द्वारा श्रद्धालु जनता के धन तथा विवेक का शोषण जाति-पांति और छुआ-छूत के नाम पर मनुष्य-मनुष्य के बीच का दुखदायी विभेद—नर-नारी के बीच अन्याय पूर्ण बड़प्पन और लघुता, विवाह शादियों में होने वाला अपव्यय आदि कितनी ही ऐसी सामाजिक दुष्प्रवृत्तियाँ घुस पड़ी हैं जिन्हें हटाये बिना वह अपनी प्रखरता पुनः प्राप्त कर नहीं सकेगी। इसके बिना उसके लिए अपनी महान संस्कृति को विश्व-व्यापी बनाने का—मानव समाज का अध्यात्म धर्म में पुनः दीक्षित करने का अवसर मिलेगा ही नहीं। इन व्यवधानों से जूझने के लिए वानप्रस्थों की सृजन सेना को अग्रिम मोर्चे पर खड़ा किया जायगा।

युग-निर्माण योजना का आरम्भ अखण्ड-ज्योति परिवार के सदस्यों से आरम्भ हुआ। पिछले दिनों हिन्दू समाज में विशेषतया भारतवर्ष में उसे सुविस्तृत होने का अवसर मिला। पर अब यह अभियान उस सीमा में सीमाबद्ध नहीं रहा। उसने विश्वव्यापी रूप ग्रहण कर लिया है। सभी धर्म सभी संस्कृतियाँ, सभी देश, सभी भाषायें अब उसके कार्य-क्षेत्र की परिधि के अन्तर्गत हैं। भारत से बाहर प्रायः ४५ देशों में लगभग ३ करोड़ हिन्दू बसे हैं। यह पैंतालीस देश ऐसे हैं जहाँ उनकी संख्या हजारों से लेकर लाखों तक में है। जिनमें सौ से लेकर हजार तक की संख्या है उनकी संख्या भी लगभग इतनी ही होगी है। अपना प्रयास यह है कि हिन्दू धर्मानुयायी प्रायः सभी भारतीय मूल के लोगों तक सांस्कृतिक पोषण पहुँचाया जाता रहे ताकि वे अपनी भाषा और संस्कृति को भूल न बैठें। इस दिशा में सुव्यवस्थित योजना के साथ कार्य आरम्भ भी कर दिया गया है। थोड़ी जड़ें मजबूत हो जाने पर उन देशों के निवासियों में भी भारतीय धर्म का प्रवेश और विस्तार उसी तरह कराया जाना है जिस तरह इसाई मिशनरी भारत तथा अन्य देशों में अपना सांस्कृतिक विस्तार करते हैं।

वानप्रस्थों को भारत के हिन्दू धर्म के—निजी क्षेत्र में लोक-निर्माण का अभ्यास कराया जा रहा है। वस्तुतः यह उनका अनुभव वृद्धि और अभ्यास का शिक्षण काल है। जो उसमें खरे उतरेंगे और परिपक्व सिद्ध होंगे उन्हें विदेशों में भी भेजा जायेगा। आज संसार भर में अध्यात्म धर्म की प्यास है। भौतिकता के उन्माद से उत्पन्न दुष्परिणामों को मनुष्य जाति ने देख लिया है अब उसे उस स्नेह सिक्त शान्ति की प्यास है जिसे भारत द्वारा संसार भर में चिरकाल तक अमृत वर्षा की तरह बरसाया जाता रहा है। भारतीय तत्वज्ञान ही भविष्य में विश्व का दर्शन एवं धर्म होने जा रहा है। उसका प्रकाश सर्वत्र फैलाया जाना है। इसलिए अपना कार्य-क्षेत्र समस्त संसार होगा और हमारे वानप्रस्थों को उसी तरह डेरे डाल कर सुदूर देशों में पड़ना होगा जैसे इसाई धर्म के पादरी सुदूर देशों में जा बसते हैं। बौद्ध धर्म का विस्तार भी जीवट वाले प्रचारकों ने इसी दुस्साहस को अपनाते हुए किया था। अपने वानप्रस्थों को भी उसी राह का अवलम्बन करना होगा।

हिन्दू धर्म से आगे बढ़कर इसाई धर्म, मुसलमान धर्म, बौद्ध धर्म, यहूदी धर्म, पारसी धर्म आदि संसार के प्रमुख धर्मों को भी अपने महान मिशन के लिए उपयोग किया जाना है यह कैसे होगा इसे अगले दिनों हम सब प्रत्यक्ष रूप से देखेंगे।

०

Disclaimer / Warning: All literary and artistic material on this website is copyright protected and constitutes an exclusive intellectual property of the owner of the website. Any attempt to infringe upon the owners copyrights or any other form of intellectual property rights over the work would be legally dealt with. Though any of the information (text, image, animation, audio and video) present on the website can be used for propagation with prior written consent.